*ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA*
**ISSN No.: 2347-2944,** RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-116-120**,YEAR-2015

# गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था में जीवन–मूल्यों का प्रासांगिक अध्ययन

❑ **डॉ0 अशोक कुमार**

***शोध सारांश–*** *शोधकर्ता ने अपने अपनी समस्या गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था में जीवन–मूल्यों का प्रासांगिक अध्ययन व समाधान तथा गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था में जीवन मूल्यों के विकास का अध्ययन करने के लिये प्रस्तुत शोध कार्य में कुल नौ गुरुकुलौं का चयन किया है। प्रस्तुत शोध में अनुसंधान कर्ता ने कुछ प्रमुख संदर्भ बिन्दुओं के आधार पर प्रदत्तों एवं लेख–साक्ष्यों का विश्लेषण कर अनुसंधान–उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयास किया है।जीवन मूल्यों के विकास की अध्ययन श्रृंखला में सर्वप्रथम तो यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि गुरूकुल के छात्र वर्तमान समय में देशभक्ति के मूल्य को सर्वोच्च वरीयता प्रदान कर रहे है तथा उसके बाद स्वास्थ मूल्य प्रथम वरीयता के रूप में उभर कर सामने आ रहे है।*

**शब्द कुंजी** – जीवन मूल्य, गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था, संस्कार, नैतिकता, वेद, शास्त्र, व्रहमचर्य, उच्च आदर्श, मौखिक शिक्षाए।

**प्रस्तावना–** प्राचीन काल में सम्पूर्ण पृथ्वी के लोग हमारे देश के विद्वानों के चरणों में वैठकर चरित्र की शिक्षा लेने आते थे। भारद्वाज, वशिष्ठ, धौम्य जैसे ऋषि मुनियों के गुरुकुलीन आश्रमों से चन्द्रगुप्त जैसे चक्रवर्तीय सम्राट, चाणक्य जैसे महान राजनीतिज्ञ, पाणिनि सद्रश महान व्याकरण विद्या प्राप्त करके निकले, संसार में भारत वर्ष का नाम उज्जवल किया । हमारे देश के महान पुरुष रामकृष्ण परमहंष गुरुकुलीय शिक्षा की देन थे । आज खेद है कि गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था के अभाव में अनेको समस्याऐं उत्पन्न हो गयीं है जैसे शिक्षा समस्या, अनुशासन हीनता, नास्तिकता, वेकारी, भ्रष्टाचार, आत्म हत्या, जनसंख्या वृद्धि और जाति पाँति आदि । इन समस्याओं ने मुझे पुनः प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था लागू कराने व अन्वेषण शिक्षा के लिए प्रेरित किया है इसके साथ ही ऋतु गगन के प्रमुख नक्षत्रों से ज्ञान प्राप्त कर गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था में जीवन मूल्यों विकास की प्रासंगिकता पर समाधान विश्व कल्याणार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैंने शोध कार्य के लिये जिन गुरूकुलों का चयन किया है वे उत्तर प्रदेश के कानपुर, लखनऊ, फर्रूखाबाद, हाथरस, औरैया, फिरोजाबाद, वाराणसी जनपदों के गुरूकुल विद्यालयों तक सीमित है, जो इस प्रकार हैं –

1. अर्थ गुरूकुल सेवा समिति, शमशाबाद, फर्रूखाबाद
2. विरसा मुण्डा बनवासी छात्रावास, रावतपुर, कानपुर
3. गुरूकुल आश्रम बन्थरा, लखनऊ
4. महार्षि दयानन्द गुरूकुल सेवा समिति, कृष्णपुर, शमशाबाद फर्रूखाबाद
5. आर्थ गुरूकुल महाविद्यालय, सिरसागंज, फिरोजाबाद
6. आर्थ गुरूकुल यज्ञतीर्थ, एटा
7. आर्थ गुरूकुल, एरवाकटरा, औरैया
8. कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, हाथरस
9. पाणिनी गुरूकुल महाविद्यालय, वाराणसी

शोधकर्ता ने अपने अपनी समस्या समाधान व गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था में जीवन मूल्यों के विकास का अध्ययन करने के लिये प्रस्तुत शोध इन नौ गुरूकुलौं के कुल 100 छात्रों का चयन किया तथा गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन के लिये प्रस्तुत अध्ययन में नौ गुरूकुलों के संस्था प्रमुखों एवं शिक्षकों का चुनाव किया ।

**अनुसंधान विधि –**इस शोध में शोधकर्ता ने ऐतिहासिक शोध के अर्न्तगत सर्वेक्षण अनुसंधान विधि के साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थी ने गुच्छ न्यायदर्शन या गुच्छ प्रतिदर्शन या जिले क्षेत्र प्रतिदर्शनर भी कहा जाता है, का प्रयोग किया जाता है।

असिस्टेन्ट प्रोफेसर,**M.A.,M.Ed., Ph.D.**चौ0 चरण सिंह पी0जी0 कॉलेज हैवरा, इटावा(उ0प्र0) भारत

जाता है, का प्रयोग किया जाता है । तथा शोधार्थी ने गुरूकुल व्यवस्था की कई की कई इकाइयों में से नौ उप इकाइयों का चयन यादच्छिक ढंग से करते हुए 'प्रश्नावली' का प्रयोग कर जीवन–मूल्यों का अध्ययन किया गया ।

**उपनयन संस्कार –**उपनयन संस्कार आज के आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में प्रवेश प्रक्रिया का ही प्रतिरूप है। उपनयन शब्द का शाब्दिक अर्थ 'पास ले जाना' है। उपनयन संस्कार द्वारा आचार्य बालक को भौतिक शरीर के स्थान पर एक विद्यालयी शरीर प्रदान करता है। उपनयन संस्कार के सह आचार्य उपनीत बालक से पूछता था– 'कस्य ब्रहमचारी असि?' बालक 'भवतः' कहकर अपने आपको आचार्य को समर्पित कर देता था। उपनयन संस्कार के बाद तीन दिन तक विद्यार्थी की मनोवृत्ति रूचि आदि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण तथा छः माह तक सदाचार का परीक्षण होता था। इसमें उपयुक्त पाये जाने पर बालक ब्रह्मचारी, अन्तेवासी अथवा आचार्य कुलवासी आदि नामों से जाना जाता था। आचार्य द्वारा बालक अन्तेवासिन बनते समय व्रतोपदेश प्राप्त करता था।

**शिक्षा का व्यवस्थापक –**गुरूकुल शिक्षा प्रणाली में गुरू ही समस्त शैक्षिक एवं आवासीय कार्यो का व्यवस्थापक था। गुरू ज्ञान व आध्यात्मिक प्रगति की दृष्टि से समाज में सर्वोच्च व्यक्ति था तथा उसमें अग्नि की सी तेजस्विता व इन्द्र की सी वीरता थी। अतः स्वाभाविक ही उन्हें लोकप्रियता प्राप्त थी। वे गुरू शिष्यों को पुत्रवत रखते थे और उनके भोजन वस्त्र व निवासादि का प्रबन्ध स्वयं करते थे तथा उनके सुख–दुख में वह भी समान रूप से भाग लेते थे। चरित्र निर्माण पर बल देते हुए वह अपने शिष्यों से यह कामना करते थे कि वे उनसे भी अधिक यश कीर्ति प्राप्त करें।

**गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यक्रम–**गुरूकुल शिक्षा आध्यात्मिक एवं सांसारिक दोनों प्रकार की उन्नति चाहती थी। अतः गुरूकुल शिक्षा में दो प्रकार के विषय सम्मिलित थे।

**1. परा विद्या**

**2. अपरा विद्या**

परा विद्या के अन्तर्गत तत्कालीन उपलब्ध सभी धार्मिक साहित्य तथा वेद, वेदांग उपनिषद, पुराण, दर्शन तथा नीतिशास्त्र आदि सम्मिलित थे। अपरा विद्या के अन्तर्गत इतिहास, अंकशास्त्र, ज्योतिश, भौतिकशास्त्र, प्राणिशास्त्र भूगर्भ विद्या एवं तर्कशास्त्र आदि विषयों के साथ–साथ शिल्प कलाएँ एवं ललित कलाएँ भी सम्मिलित थे।

**शिक्षण विधि –**गुरूकुल प्रणाली में शिक्षण विधि मुख्य रूप से मौखिक रूप से मौखिक थी। विद्यार्थी श्रद्धापूर्वकम गुरू मुख से वेदादि ग्रन्थों का श्रवण करता था तथा तदानुसार उच्चारण करता था। उच्चारणोपरान्त गुरू उच्चारित मन्त्रों की व्याख्या करता था। तत्पश्यात विद्यार्थी पाठ्यवस्तु का मनन निदिध्यासन, स्वाध्यायय तथा पुनरावृत्ति करता था। शिक्षण–विधि में प्रश्नोत्तर विधि भी प्रचलित थी तथा शंका समाधान के लिए वाद–विवाद एवं शास्त्रार्थ आदि का भी उपयोग किया जाता है।

**शिक्षा–शुल्क तथा अर्थव्यवस्था –**गुरूकुल शिक्षा निःशुल्क थी। शुल्क का प्रस्ताव करना शिक्षक के लिए नितान्त निन्दनीय समझा जाता था। अध्यापक की अर्थ सम्बन्धी आवश्यकताओं का ध्यान रखना समाज का कार्य था। उस काल में अर्थव्यवस्था के निम्न आधार थे –

1. गुरू दक्षिणा द्वारा
2. जन साधारण द्वारा सहायता
3. राज्य द्वारा सहायता
4. भिक्षावृत्ति द्वारा विद्यार्थी को अपने पालन पोषण तथा गुरू के लिए भिक्षा मांग कर लाना होता था। परन्तु भिक्षा उतनी ही मांगते थे जितनी उन्हें आवश्कता थी। संचय, चोरी को पाप माना जाता था।

**शिक्षा की अवधि –** गुरूकुल प्रणाली में साधारणतया शिक्षा की अवधि 12 वर्ष थी। शिक्षा की अवधि विद्यार्थी की प्रतिभा, रूचि तथा क्षमता आदि पर आश्रित थी। शिक्षा की अवधि पाठ्य–विषयों पर भी निर्भर करती थी। एक वेद के अध्ययन के लिए 12 वर्ष की अवधि आवश्यक समझी जाती थी। इस प्रकार ब्रह्मचारियों के गुरूकुल वास की चार अवधियाँ थी– 12वें वर्ष तक, 24वें वर्ष तक, 36वें वर्ष तक, 48वें वर्ष तक। इन अवधियों का पालन करने वाले ब्रह्मचारी

क्रमशः स्नातक वसु, रूद्र एवं आदित्य कहलाते थे।

**जीवन मूल्यों की गणना –** मूल्यों की गणना मानव जिसे निम्नलिखत तालिका के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। मूल्य प्रवृत्तियों या भावनाओं के आधार पर की जाती,

| मूल प्रवृत्तियाँ | जीन–मूल्य | मूल्य प्रकार |
|---|---|---|
| क्षुधा, काम प्रवृत्ति, | शारीरिक | — |
| संग्रह प्रवृत्ति, खेल | आर्थिक | जैविक मूल्य |
| शरीर श्रम, युयुत्सा | मनोविनोद | — |
| समूह में रहने की प्रवृत्ति | संगठन | अतिजैविक |
| सहानुभूति, आत्मप्रकाशन, आत्मधिक्कार | चरित्रमूल्य | सामाजिक |
| कौतुहल | बौद्धिक | अतिजैविक |
| रचना, अनुकरण तथा खेल | कलात्मक | अतिसामाजिक |
| श्रद्धा | धार्मिक | आध्यात्मिक |

**जीवन– मूल्यों का तारतम्य –**

जीवन–मूल्यों के तारतम्य के विषय में मुख्यतः तीन नियम है।

1. स्वतः मूल्य, साधन–मूल्यों से उच्चतर है।
2. स्थायी मूल्य, परिवर्तनशील–मूल्यों से उच्चतर है।
3. फलदायक मूल्य, निष्फल मूल्य से उच्चतर है।

इन्हीं नियमों के आधार पर मूल्यों का तारतम्य किया जा सकता है।

1. आर्थिक मूल्य
2. शारीरिक मूल्य
3. मनोविनोद मूल्य
4. संगठन मूल्य
5. चरित्र मूल्य
6. कलात्मक मूल्य
7. बौद्धिक मूल्य
8. धार्मिक मूल्य

निम्नतम

उच्चतम

**विश्वसनीयता –**

परीक्षण की विश्वसनीयता परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा 20 दिन के अन्तराल पर कक्षा 5 के 60 छात्रों पर निर्धारित की गयी है। आठ मूल्यों के लिये अलग–अलग प्राप्त विश्वसनीयता फलांक सारणी 1 में प्रदर्शित किया गया है।

**सारणी–1**

**विभिन्न मूल्यों के लिए परीक्षण पुनः परीक्षण विश्वसनीयता फलांक**

| मूल्य | क | ख | ग | घ | च | छ | ज | झ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विश्वसनीयता फलांक | .74 | .82 | .83 | .81 | .82 | .75 | .76 | 86 |

**इस परीक्षण की औसत विश्वसनीयता .79**

परीक्षण की प्रामाणिकता तर्क की कसौटी पर सिद्ध की जा सकती है। इसके अतिरिक्त प्रश्नावली में रखे गये प्रत्येक प्रश्न का मूल्यों के प्राप्तांको के योग से द्विपंक्तिक सहसम्बन्ध .01 स्तर की सार्थकता के मान से ऊपर होने के कारण भी परीक्षण की आन्तरिक प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

प्रस्तुत शोध में अनुसंधान कर्ता ने कुछ प्रमुख संदर्भ बिन्दुओं के आधार पर प्रदत्तों एवं लेख–साक्ष्यों का विश्लेषण कर अनुसंधान–उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयास किया है।

(अ) वर्तमान गुरूकुल की व्यवस्था का अध्ययन करने

के लिए अनुसंधानकर्ता ने एक स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रशासन वर्तमान गुरूकुलों के संस्था प्रमुखों एवं शिक्षकों पर किया। उक्त विद्यालयी सर्वेक्षण के आधार पर अनुसंधानकर्ता इस परिणाम पर पहुंचता कि वर्तमान गुरूकुल केवल नाममात्र के ही गुरूकुल है। प्राचीन गुरूकुल पद्धति को वे पूर्णरूपेण स्वीकार नहीं कर पाये है। आधुनिक युगीन गुरूकुलों का अर्थ व्यवस्थापन प्राचीन गुरूकुलों से पर्याप्त भिन्नता रखता है। अर्थ स्रोत अत्यधिक संदिग्ध है। गुरूओं की वेतन–व्यवस्था प्राचीन पद्धति के अनुसार नहीं है। शिक्षा उपाधियों पर वर्तमान सन्दर्भो का पूर्ण प्रभाव है। शिक्षण विधि एवं पाठ्यक्रम में भी पर्याप्त भिन्नता है। अतः विद्यालयी सर्वेक्षण से प्राप्त आधार सामग्री के विश्लेषण से कहा जा सकता है कि प्राचीन गुरूकुलों एवं वर्तमान गुरूकुलों की व्यवस्था में अत्यधिक भिन्नता है।

(ब) अनुसंधान के अन्य प्रमुख उद्देश्य 'गुरूकुल व्यवस्था के छात्रों में जीवन मूल्यों के विकास के अध्ययन' की पूर्ति हेतु अनुसंधानकर्ता ने वर्तमान गुरूकुलों के 140 छात्रों पर 'सद्गुण विकास परीक्षण' नामक प्रश्नावली का प्रयोग किया। इस परीक्षण से प्राप्त प्रदत्तों से शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया कि प्रत्येक छात्र ने किस जीवन मूल्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। सर्वोच्च प्राथमिकता को आधार मान कर विभिन्न जीवन मूल्यों को प्रतिशत के रूप में सारणीबद्ध करने पर निम्न तालिका प्राप्त हुई–

**तालिका–1**

**जीवन–मूल्यों की प्रतिशतता को प्रदर्शित करने वाली तालिका**

| क्र0 सं0 | जीवन मूल्य | प्रतिशत |
|---|---|---|
| 1 | ज्ञानात्मक मूल्य | 13.43 |
| 2 | आर्थिक मूल्य | 14.12 |
| 3 | सौन्दर्यात्मक मूल्य | 3.00 |
| 4 | देशभक्ति मूल्य | 22.35 |
| 5 | स्वास्थ्य मूल्य | 18.82 |
| 6 | सामाजिक मूल्य | 10.58 |
| 7 | सामर्थ्य एवं शक्ति मूल्य | 15.88 |
| 8 | धार्मिक मूल्य | 1.76 |

तालिका संख्या–1 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि देशभक्ति के मूल्य को सर्वाधिक छात्रों ने प्रथम वरीयता प्रदान की है तथा धार्मिक मूल्यों को सबसे कम छात्रों ने प्रथम वरीयता दी है। छात्रों की प्रथम वरीयता के आधार पर हमें जीवन मूल्यों का निम्न अवरोही क्रम प्राप्त होता है– देश भक्ति मूल्य स्वास्थ्य मूल्य, सामर्थ्य एवं शक्ति मूल्य, आर्थिक मूल्य। निम्न आधार बिन्दुओं का विश्लेषण करने पर यह तथ्य सामने उपस्थित होता है। कि गुरूकुलों में देशभक्ति के मूल्यों का सर्वाधिक विकास हुआ है। स्वास्थ्य मूल्य तथा समर्थ्य एवं शक्ति मूल्यों का विकास क्रम दूसरा एवं तीसरा है। जबकि जीवन मूल्यों के विकास क्रम में आर्थिक, ज्ञानात्मक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास निम्न स्तर का है।

'गुरूकुल व्यवस्था' व वर्तमान गुरूकुलों के छात्रों में जीवन मूल्यों के विकास का अध्ययन एवं परीक्षण करने के उपरान्त शोधकर्ता को निम्ननांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

**1.** वर्तमान गुरूकुल प्राचीन गुरूकुल की एक झलनक मात्र है। वे अधिकांशतः नाम मात्र के ही गुरूकुल है। इन गुरूकुलों में प्राचीन गुरूकुल व्यवस्था के प्रारूपों को पालन बहुत कम होता है।

**2.** वर्तमान गुरूकुलों में अधिकांशतः शिक्षा का व्यवस्थापन ट्रस्ट के माध्यम से होता है। केन्द्र–प्रमुख प्राचीन गुरूकुलों के आचार्यो के समान होते हैं, जो शिक्षा व्यवस्था के प्रधान होते है।

**3.** वर्तमान गुरूगुलों की अर्थव्यवस्था एवं शिक्षा–शुल्क मे पर्याप्त विसंगतियां है शिक्षकों के वेतन तथा शिक्षा–शुल्क के आधार पर आधुनिक गुरूकुलों को कदापि प्राचीन गुरूकुलों का प्रतिनिधि नहीं माना जा सकता है।

**4.** आधुनिक गुरूकुल बाह्य नियन्त्रण से पूर्णतया मुक्त नहीं है।

**5.** शिक्षण–विधि तथा पाठ्य क्रम पर आधुनिकता का

प्रभाव स्पष्टताया दृष्टिगत होता है। आधुनिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में इनका नवीनीकरण हो गया है।

**6.** परीक्षा–व्यवस्था एवं उपाधि–वितरण में भी आधुनिक गुरूकुलों तथा प्राचीन गुरूकुलों में पर्याप्त भिन्नता है।

**7.** जीवन मूल्यों के विकास की अध्ययन श्रृंखला में सर्वप्रथम तो यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि गुरूकुल के छात्र वर्तमान समय में देशभक्ति के मूल्य को सर्वोच्च वरीयता प्रदान कर रहे है तथा उसके बाद स्वास्थ मूल्य प्रथम वरीयता के रूप में उभर कर सामने आ रहे है।

**8.** गुरूकुलों के बालको में धार्मिक मूल्यों एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों का विकास बहुत कम या न के बराबर हुआ है।

**9.** शक्ति एवं सामर्थ्य जीवन मूल्यों का विकास गुरूकुलों में सामान्य रूप से हो रहा है। उक्त जीवन मूल्य को 15.88 प्रतिशत छात्रों ने सर्वोच्च वरीयता प्रदान की है। जीवन मूल्यों के विकास की श्रृंखला में इसे तृतीय स्थान प्राप्त हुआ है।

**10.** आर्थिक मूल्यों के विकास का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि इस जीवन मूल्य को सामान्यता छात्रों ने वरीयता प्रदान की है। इसे 14.12 प्रतिशत छात्रों ने सर्वोच्च वरीयता दी है। जीवन–मूल्यों के विकास क्रम में इस जीवन–मूल्य को चतुर्थ स्थान पर रखा गया है।

**11.** गुरूकुलों में ज्ञानात्मक मूल्य को 13.43 प्रतिशत छात्रो ने सर्वोच्च वरीयता दी है। सर्वोच्च वरीयता के आधार पर निर्मित विकास क्रम में इसे पांचवे क्रम पर रखा गया है।

**12.** सामाजिक मूल्यों के विकास के अध्ययनोंपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त होता है। कि इस मूल्य को 10.58 प्रतिशत छात्रों ने सर्वोच्च वरीय जीवन मूल्य के रूप में स्वीकार किया है। जीवन मूल्यों के विकास क्रम में यह छठा स्थान रखता है।

आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, देशभक्ति मूल्य, स्वास्थ्य मूल्य, सामाजिक मूल्य, सामर्थ्य एवं शक्ति मूल्य, धार्मिक मूल्य के प्रति समष्टि में बालकों की राय पांच प्रतिक्रिया वर्गो में सामान्य रूप से वितरित नहीं है अर्थात इनका वितरण सामान्य प्रायिकता वक्र के अनुरूप नहीं है।

**निष्कर्षत–** हम कह सकते है कि गुरुकुल व्यवस्था के जीवन मूल्य वर्तमान समय में भारतीय सांस्कृतिक पर्यावरण को पाश्चात्य सांस्कृतिक प्रदूषण से मुक्त करने के लिये अति आवश्यक है क्योंकि शिक्षा एक लक्ष्योन्मुखी प्रक्रिया है ।

## Reference


1. Antes, Richard, L. Nardini, Mary Lois, 1994. Another view of School refonn. Values and ethics restored. Counseling and Values, 38(3): 215-222.
2. Ban, Tsuenenoby; Cummings, William K. 1999. Moral orientation of School children in the united States and Japan. Comparative Education Review, 43(1): 65-85.
3. Haldane John, 1986. Religious Education in a pluralist Society. A Philosophical Examination. British Journal of Educational Studies 34(2): 161-181.
4. Haydon, Graham, 1993 . Values Education in democratic society. Studies in philosophy and Education, 1(1):33 33- 44. Hoekstra, Henk; Verbeek, Maljeet, 1997. Media-Morality Moral Ecucation. The project on Audiovisual Culture; Communication -Socialism, 30(4): 427-433.
5. Legrand, Louis, 1995 The problem' of values at French Schools today. International Review of Education, 4 (1): 1-2,319.
6. Lovin, Robin, W. 1988The School and Articulation of Values, American-Journal of Education .96(2):143-161
7. Mortier, Freddy, 1995. Separate varieties Education and Moral development in Secondary Schools. J oW11al of Moral Education. 24(4): 409-426.
8. Rigoni, David, P.; Lmnagdeleine, Donald R.,1998. Computer Majors' Education as moral Enterpdse. A Ourdheimian Analysis. iournaJ of:Moral Education 27(4): 489-503.
9. Veugelers, Weil. 2000. Different ways of teaching values.Educational Review, 52(1):37-46.


*****